राहुल गॉधी या नरेन्द्र मोदी

यह वर्ष चुनाव निकट होने के कारण राजनैतिक बुखार से तप रहा है। स्पष्ट हो चला है कि मुख्य मुकाबला दल के रूप में भाजपा और कांग्रेंस के बीच तथा व्यक्ति के रूप में नरेंद्र मोदी तथा राहुल गॉधी के बीच होगा। दिख रहा है कि नीतियो के मामले में भी धर्मनिरपेक्षता तथा सॉम्प्रदायिकता मुख्य मुद्दे रहेगें। यदि हम व्यक्ति की बात करे तो नरेंद्र मोदी एक योग्य किन्तु अविश्वसनीय उम्मीदवार के रूप में सामने आ रहे हैं।, यदि उन्हे कुशल वक्ता के साथ साथ लोमडी के समान चालाक भी कहा जाय तो नरेंद्र मोदी उससे भी आगे निकल सकते है। दूसरी ओर राहुल गॉधी प्रधानमंत्री पद के लिए एक अक्षम किन्तु विश्वसनीय अपरिपक्व अनाडी के रूप में दिख रहे है।स्पष्ट है कि शराफत सीमा से आगे बढती है तो मूर्खता मे बदल जाती है, दूसरी ओर चालाकी सीमा से आगे बढती है तो धूर्तता मे बदल जाती है। राहुल गॉधी के हर वाक्य में शराफत का बोध होता है। नरेंद्र मोदी जहॉ भी बोलते है वे प्रधानमंत्री या राहुल गॉधी या सोनिया गॉधी पर प्रत्यक्ष आक्रमण करते है। राहुल गॉधी ने नरेंद्र मोदी पर प्रत्यक्ष रूप से आक्रमण से भी स्वयं को दूर रखा है। नरेंद्र मोदी के लिए जुटी भीड में कितनी भीड उनके स्वयं के द्वारा प्रायोजित होती है और कितनी स्वयं या पार्टी प्रयोजित यह बताना कठिन है जबकि राहुल गॉधी की रैली में न तो लोग स्वयं आते है न राहुल गॉधी के प्रयत्नो से आते है। सिर्फ पार्टी द्वारा प्रयोजित लोग ही उनको सुनने के लिए आते है। अब तक के भाषणो में यह भी स्पष्ट होता है कि नरेंद्र मोदी के भाषणो में कला होती है आकर्षण होता है जब कि राहुल गॉधी के भाषण नीरस किन्तु बिना लाग लपेट के होते है।

यदि दल के रूप में विचार करे तो कांग्रेस पार्टी पहले भी कोई दल न होकर गॉधी परिवार के साथ जुडी हुयी थी, और आज भी किन्तु भारतीय जनता पार्टी कुछ महिने पहले तक एक राजनैतिक दल के रूप में मानी जाती थी, जिसमे आंशिक रूप से लोकतंत्र था। पिछले कुछ महिनो से भारतीय जनता पार्टी ने भी अपने लोकतात्रिक स्वरूप की सफलता पर संदेह व्यक्त करते हुए स्वयं को संघ समर्पित कर दिया। अब भारतीय जनता पार्टी कोई राजनैतिक दल न रहकर संघ परिवार की एक शाखा मात्र बन गई है। यदि हम लोग नीति की बात करे तो कांग्रेस पार्टी अघोषित रूप से तुष्टीकरण की राह पर चल रही है, और संघ परिवार अपने जन्म से ही साम्प्रादायिक तुष्टीकरण की नीति को आधार बनाकर काम करता है। इस तरह यदि धर्मनिर्पेक्षता और साम्प्रदायिकता के बीच तुलना की जाय तो दोनो ही दल खरे नही उतरते है। फिर भी संघ परिवार घोषित रूप से स्पष्ट साम्प्रदायिक है तथा कांग्रेस पार्टी अघोषित रूप से आंशिक साम्प्रदायिक है। स्पष्ट दिखता है कि संघ परिवार साम्प्रदायिकता के आधार पर क्रिया करता है तथा कांग्रेस पार्टी उसकी प्रतिक्रिया स्वरूप दूसरे पक्ष को अपने साथ जोडने का प्रयत्न करती है। संघ परिवार का नारा है कि हिन्दू राष्ट्र तथा हिन्दू साम्प्रदायिकता को उभारकर येन केन प्रकारेण सत्ता प्राप्त करना जब कि कांग्रेस पार्टी हिन्दुओ को छोडकर शेष सम्प्रदायो कों भी अपने साथ जोडे रखने की तिकडम करती है, साथ ही वह हिन्दुओ को भी एक तरफ नही जाने देना चाहती है। इस तरह धर्म निरपेक्षता के नाम पर कांग्रेस पार्टी आक्रमण की शिकार है तथा संघ परिवार आक्रमणकारी।

अभी कुछ दिन पहले राहुल गॉधी ने एक भावनात्मक भाषण देते हुए यह बात कही कि समाज में हिंसा के विस्तार का समर्थन बिल्कुल भी उचित नही है। इसी हिंसा के समर्थन नें महात्मा गॉधी की जान ले ली तथा उनकी दादी इंदिरा जी भी इसी के कारण मारी गयी तथा इनके पिता राजीव गॉधी भी इसी हिंसा के शिकार हो गये। संभव है कि उनका भी नम्बर इसी तरह आ जावे। उन्होने नाम लेकर कहा कि भारतीय जनता पार्टी हमेशा सामाजिक हिंसा का समर्थन करती है तथा वह जो आग लगाती है वह हमे बुझानी पडती है। यदि इस कथन की समीक्षा की जाय तो इसमे असत्य कुछ भी नही है। इंदिरा गॉधी अमृतसर में स्वर्ण मंदिर पर आक्रमण के बाद मारी गयी। स्पष्ट है कि स्वर्ण मंदिर पर आक्रमण मजबूरी में हुआ था, न कि किसी और कारण से। यदि इंदिरा गॉधी की जगह मै भी होता तो यही करता। स्वर्ण मंदिर पर आक्रमण सिक्खो के संगठित बढते मनोबल को दबाने के लिए किया गया एक प्रयास था इसके बदले में इंदिरा गॉधी को अपनी जान देनी पडी। स्पष्ट है कि सिक्खो के बहुमत ने स्वयं को समाज से अलग एक संगठन के रूप में ही बनाकर रखा है। आज भी उनकी भाषा आंशिक रूप से उसी दिशा में बढ रही है जिस दिशा में बढते बढते अंत में स्वर्ण मंदिर पर आक्रमण हुआ था। इंदिरा गॉधी की हत्या हुयी थी और बहुत बडी मात्रा में निर्दोष सिक्ख मारे गये थे। राजीव गॉधी की हत्या लिट्टे ने की थी। लिटटे की मदद राजीव गॉधी ने की थी , किन्तु लिटटे की मनमानी मॉगो से कही न कही राजीव गॉधी असहमत हुए। जिसका परिणाम उनकी हत्या के रूप में आया। उसके बाद लंका में लिट्टे की क्या गति हुयी यह दुनिया जानती है। अभी अभी मुलायम सिह जी ने उत्तर प्रदेश में मुस्लिम साम्प्रदायिकता को सिर पर चढाकर उसे संतुष्ट करने का प्रयत्न किया। मुलायम सिह यह भूल गये कि साम्प्रदायिकता को सिर्फ कुचला जा सकता है संतुष्ट कभी नही किया जा सकता है। हम देख रहे है कि मुजफरनगर के दंगो से मुलायम सिह यादव को कुछ सबक सीखने को मिला। मुजफफर नगर के दंगो मे भी साम्प्रदायिक मुसलमानो की ओर से क्रिया की गयी थी। इसकी प्रतिक्रिया में दंगे हुए और वे बडी संख्या में मारे गये ।

हमने देखा है कि जब मुस्लिम साम्प्रदायिकता उफान पर थी और गुजरात में साम्प्रदायिक मुसलमानो ने पहल करके गोधरा में कुछ क्रिया की तो उसकी प्रतिक्रिया में पूरे गुजरात में ऐसा नरसंहार हुआ कि अब वहॉ का साम्प्रदायिक मुसलमान भी समाज के साथ चलने के लिए सहमत दिखता है। मै फिर से स्पष्ट कर दूँ कि यदि साम्प्रदायिकता को कुचल दिया जाय तो साम्प्रदायिकता धर्म निरपेक्ष हो जाती है जैसा कि गुजरात में हुआ किन्तु यदि साम्प्रदायिकता को संतुष्ट करने का प्रयास किया गया तो धर्मनिरपेक्षता भी सामप्रदायिक हो जाती है जैसा कि उत्तर प्रदेश के मुजफफर नगर में हुआ । मुझे स्पष्ट दिखता है कि यदि भारत में हिन्दू साम्प्रदायिकता को भी संतुष्ट करने का प्रयत्न जारी रहा तो फिर किसी गॉधी की हत्या यदि हो जाय तो कोई आश्चर्य नही माना जायेगा। यद्यपि गॉधी के रूपमें मेरा इशारा राहुल गॉधी के रूप में नही है लेकिन हम एक खतरे के दिशा में तो बढ रहे है।

यदि तानाशाही पर विचार करे तो संघ परिवार भी तानाशाही का प्रतिविम्ब है और नरेंद्र मोदी भी। वहॉ से अब किसी भी प्रकार के लोकतंत्र की आशा करना ब्यर्थ है। यद्यपि भारत की वर्तमान स्थिति के समाधान के लिए भारत की जनता का बहुमत किसी तानाशाही के पक्ष में ही है। दूसरी ओर कांग्रेस पार्टी नीतिगत रूप से तानाशाही विचार धारा के विरूद्ध है तथा राहुल गॉधी तो उससे भी आगे बढकर तानाशाही के विरूद्ध प्रयोग कर रहे हैं। कांग्रेस पार्टी के आने से समस्याऍ सुलझेगी या नही इसमे संदेह है। लेकिन भारतीय जनता पार्टी के आने से समस्याए सुलझेगी इसमे कोई संदेह नही है। विशेषकर संघ परिवार के हस्तक्षेप के बाद यह बात साफ दिखने लगी है। आगामी चुनाव में भारत की जनता को यह साफ निर्णय करना होगा की वह तानाशाही के माध्यम से समस्याओ का समाधान चाहती है अथवा लोक तंत्र के माध्यम से अस्थिरता का खतरा उठाना उसे मंजूर है। उसे यह निर्णय करना है कि वह हिन्दू साम्प्रदायिकता को उभार कर मुस्लिम साम्प्रदायिकता को हमेशा के लिए निपटा देना चाहती है अथवा धीरे धीरे धर्म निरपेक्षता की ओर बढकर पूरी साम्प्रदायिकता पर अंकुश लगाना चाहती है। दुनिया ने देखा है कि हिटलर ने भी यही जुआ खेला था भले ही उसका परिणाम आज तक उदाहरण के रूप में दिख रहा है। हो सकता है कि यदि उस समय हिटलर सफल हो जाता तो दुनिया के नक्शे मे अमेरिका की जगह जर्मनी होता, लोकतंत्र की जगह तानाशाही होती भारत भी 1947 के पूर्व उसी समय स्वतंत्र राष्ट हो जाता। वर्तमान चुनाव मे भाजपा या नरेन्द्र मोदी के नाम पर हम जो जुआ खेलने जा रहे है उसका परिणाम हिटलर के समान होगा अथवा उसमे कोई संशोधन होगा , यह तो आज नही बताया जा सकता है क्योकि तानाशाही का परिणाम बुरा ही होता है, यह भी निश्चित नही है। फिर भी यदि अंतिम मजबुरी न आ जाये तब तक ऐसा खतरा उठाना ठीक नही है, और चाहे सारा देश उसके लिये तैयार हो किन्तु कम से कम मै तो ऐसी मजबूरी नही समझता।

प्रश्नोत्तर

1 एस एम गुप्ता, विलासपुर छत्तीसगढ

प्रश्न– इन दिनो हमारे देश में साधु संत लोग भी राजनीति मे दखल देने लगे है। आये दिन मंत्रियो तथा सांसदो को भी अपनी इच्छा पूर्ति के लिए माध्यम बना रहे है। इसी श्रृंखला में आसाराम जी का नाम आ रहा है। उनका दृढ विश्वास है कि जो उन्हे अड़ंगा डालेगें उनका राजनीतिक दृष्ट्रि से वूद सिस होना निश्चित है। इसी तरह रामदेव जी, अन्ना हजारे जी केजरीवाल जी आदि लोग हमारे देश का नवीनीकरण करने में लगे हुए है। अतः सबके बारे में अपने विचार व्यक्त करे।

उत्तर– यह बात सही है कि अनेक साधु संत व्यावसायिक हो गये है, और अपने व्यवसाय की सफलता के लिए राजनीति का भी सहारा ले रहे है। आशाराम बापू ने भी वही मार्ग पकडा। भारतीय जनता पार्टी तथा संघ परिवार ने उनका भरपूर समर्थन किया। हमारे शहर के भी संघ प्रमुख आशाराम के प्रचारक और प्रशंसक रहे है। आज हम देख रहे है कि ऐसे भाजपा और संघ के लोग मुंह छिपा कर बैठे है। कांग्रेस पार्टी ने भी आशाराम सरीखे व्यवसायियो का बहुत उपयोग किया है। कौन नही जानता कि संत राम रहीम कांग्रेस पाटी की कृपा पर ही निर्भर है। बाबा रामदेव जी के पैर छूने में भी कांग्रेस और भाजपा में होड मची थी।

अभी भी रविशंकर जी महाराज को दोनो ही दलो की यह सुविधा प्राप्त है। किन्तु मै आप से यह सहमत नही हूँ कि अन्ना हजारे भी उसी श्रेणी में शामिल है। क्योकि उन्होने कोई पद या सम्पत्ति इन नेताओ से लेने का कोई प्रयास नही किया है, आशा राम जी की तो पोल खुल गई। अन्य अनेक ऐसे लोंगों की पोल खुलनी बाकी है, तब तक ऐसे लोग इन राजनेताओं का तथा राजनेता ऐसे लोगो का उपयोग करतें रहेगें। हमारे हाथ में इस संम्बन्ध मे कुछ नही है। जब तक सत्ता और संम्पति अकेन्द्रित नही होगी तब तक इसका कोई समाधान नही है।

2 विमल झांझरी 18 पत्रकार कालोनी गेंट नं0 2 साकेत नगर इंदौर–

सुझाव–ज्ञान तत्व मे रचनात्मक (देश विकास) लेखो का पूर्णतया अभाव है। कुछ प्रतिशत समावेश अवश्य करना चाहिये। सभी विभागो में तत्कालीन आवश्यकता है। रक्षा रेलवे मानव संसाधन गृह आदि सबकी कुछ महत्वपूर्ण चर्चाए होनी चाहिये।

आप अपने पाठको को ज्ञान तत्व के माध्यम से आग्रह करे कि वे आपको इससे संबंधित जानकारी तुरंत भिजवाए। तदुपरांत विशेषज्ञो से उनके विचारो को प्रकाशित करें।

पत्रोत्तर की प्रतिक्षा में इस संदर्भ मे आपके क्रियान्वन की प्रकिया सूचित करे। ऐसा आव्हान्।

उत्तर– ज्ञान तत्व एक वैचारिक पत्रिका है, जो विचार मंथन तक सीमित है। ज्ञान तत्व ने रचनात्मक कार्यों से दूरी बनाकर रखी है। हम मुख्य रूप से तीन ही काम कर रहें हैं– 1. रामानुजगंज के आसपास 130 गॉवो मे ग्राम सभा सशक्तिकरण को आधार बनाकर नई समाज रचना का कार्य 2. समाज मे फैली असत्य धारणाओं को चुनौती देकर सत्य को स्थापित करने का प्रयास 3. भारत मे लोकतंत्र की परिभाषा लोकनियुक्त तंत्र से बदल कर लोकनियंत्रित तंत्र करने के लिए पहले कदम के रूप मे लोकसंसद ऑदोलन की शुरूआत। चौथा काम हम हाथ मे नही ले रहें हैं। आपका सुझााव इन तीनो मे कहीं शामिल नही होता है। आप यदि और स्पष्ट करेंगें तो हम फिर से विचार करेंगें।

3 विवेक शुक्ल, ज्योति एकेडमी, बागपत गेट, मेरठ उ.प्र.।

प्रश्न—ज्ञानतत्व का 275 अंक मिला। काफी समय पूर्व यह अखबार किसी कबाडी की दुकान से प्राप्त करने के बाद मोबाइल द्वारा मैसेज से आपको अपनी प्रतिक्रिया दी थी। आपने याद रखा और अखबार भिजवाना संभव किया । सततः साधुवाद।

आपके विचार इतने मौलिक अनुभव जन्य और मजबूत है कि अगर अपनी मेधा का उपयोग आप फिलोसफी के क्षेत्र मे किये होते तो विवेकानंद अरविन्द या ओशो का स्टेज पा लिये होते । लोकप्रियता के मामले में।

मेरठ की रचना दुबलिश आर एस एस वादी है। और यही सब अखबारो के पाठकीय मे लिखती है। आपका तीखा जबाब शायद उन्हे जगा पाये।

क्या आपके पास बेरोजरारी बेकारी की समस्या पर भी कोई समाधान परक चिंतन है। मेरी जानकारी मे बी ए, एम ए, आई आई टी, पास लोग भी आज डेली बिकने के लिये शहर के चौराहो पर मजदूरो की भीड का हिस्सा बनने लगे है। सभी को क्रेता कहां मिलते है। बाकी बेचारे टिफिन वापस लेकर घर लौट जाते है। इस समस्या पर भी आप कुछ लिखे तो अच्छा होगा।

उत्तर—आप मेरठ के रहने वाले हैं इसलिए आपको अधिक जानकारी होगी कि रचना दुबलिश संघ से जुडी हुई है, मुझे इसकी जानकारी नही है। आपने बेरोजगारी पर प्रश्न पुछा है, तो ज्ञान तत्व 278 इसी विषय पर गया है। मुख्य प्रश्न यह है कि बेरोजगारी की परिभाषा क्या है? वर्तमान समय मे कुछ बुद्धि जीवियों ने श्रम का शोषण करने के उदेश्य से बेरोजगारी की एक नयी परिभाषा प्रचलित कर दी है, जो पूरी तरह गलत है। नई परिभाषा इस तरह बनानी चाहिए कि किसी स्थापित व्यवस्था द्वारा घोषित न्यूनतम श्रम मूल्य पर योग्यता अनुसार काम का अभाव बेरोजगारी मानी जायेगी। वर्तमान समय मे न्यूनतम श्रम मूल्य पॉच व्यक्तियों के एक परिवार के लिए औसत पौने दौ सौ के आसपास है। इससे अधिक प्राप्त करने की इच्छा रखने वाले को बेरोजगार नही माना जा सकता क्योंकि वह उचित रोजगार की प्रतीक्षा मे है। आप जिनको सडको पर घूमते देख रहें हैं वे उचित रोजगार की प्रतीक्षा मे हैं न कि बेरोजगार। मै मानता हूॅ कि एक सौ पचहत्तर रूपया प्रतिदिन एक परिवार के लिये पर्याप्त नही है किन्तु यह भी विचार करना होगा कि भारत के करीब चार करोड परिवार आज भी एक सौ पचहत्तर रूपये से कम पर जीवन जीने को मजबूर है। ऐसी स्थिति मे इससे अधिक पाने वालो की चिन्ता बाद मे ही की जा सकती है पहले नही।

4 श्री शिवदत्त जी, बाघा, बॉदा, उत्तर प्रदेश

प्रश्न— दुनिया की सारी आबादी किसी न किसी खूटे से बधी हुई है।नागपुर के श्री सुनील तामगाडगे स्व0 श्री डा0 अम्बेडकर के खूटे से बधे जान पडते है। अपने पत्र में (प्रकाशित ज्ञान तत्व 1—15सि0) जिस फूहड भाषा का उपयोग उन्होने किया है, उससे उनके अहंकार व अशिष्टता की जानकारी मिलती है। संविधान की रचना का श्रेय अम्बेडकर जी को दिया जाता है। तब भारत में जातिवाद की विषवेल को पुख्ता बनाने की जिम्मेवारी से वे कैसे बच सकते है।

दुनिया में सिर्फ और सिर्फ दो क्लास है। तीसरे का कोई अस्तित्व नही है । पुवर क्लास (जो जीवन की जीने लायक आदमी की पहचान लायक जरूरते पूरी करने में अक्षम है।) तथा पावर क्रास (जो सब तरह से सक्षम है।)

जाति आधारित आरक्षण न देकर क्लास आधरित आरक्षण दिया जा सकता था।यदि जाति आधारित भेद भाव खतम करने की मंशा होती तो यह संभव था। डा0 अम्बेडकर, जिन्होने खुद जाति भेद की पीडा को झेला था, से एक प्रगतिशील संविधान की दरकार थी न कि परम्परावादी यथास्थितिवादी संविधान की। इसके दुष्परिणाम तत्काल सामने आये। आधुनिकता के तमाम तत्कालीन झंडा बरदार जातीय रंग में रंग गये। इनमे जवाहर लाल भी एक थे जिन्होने जो अपने नाम के आगे पीछे जातिबोधक शब्दो के साथ पंडित_जवाहर लाल नेहरू लिखने के मोह का परित्याग नही कर सके। आज यह देश संविधान की इसी विसंगति का शिकार है और जातिवाद की कटु सच्चाई से रूबरू है। जिसने लोकतंत्र के मायने बदलकर रख दिये है। जातिवाद का अर्थ है सामंतवाद। इसके अलावा इसका दूसरा अर्थ हो ही नही सकता। शासन प्रशासन की अलोकतांत्रिक कार्यशैली, जाति आधारित राजनैतिक दलो का वजूद इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। लोकतंत्र पर हावी जातिवादी ताकतो ने लोकतंत्र को जातियों के अप और डाउन के अवसर के रूप मे लिया हैं जिसके दुष्परिणाम यह निकल रहे है कि समाज व देश विभाजन के कगार पर पहुच रहे है । जातिवादी सोच अभी जितनी हल्की दिख रही है उतनी हल्की है नही। मैने डा अम्बेडकर को नही पढा । पर जो सुना उस आधार पर मै श्री तामगाडगे जी से जानना चांहूगा कि देश की आजादी की लडाई मे अम्बेडकर जी का क्या योगदान रहा? यह भी सुना गया कि ब्रिटिश गवर्नर से मिलकर उन्होने भारत पर कुछ और समय तक ब्रिटिश शासन बनाए रखने तथा खुद को जज नियुक्त किये जाने की सिफारिश गुजारिश की थी। भारत विभाजन के समय श्री अम्बेडकर जी ने अछूतिस्तान का प्रस्ताव भी किया था। सच क्या है तामगाडगे जी बेहतर जानते होगें। रही बात छुआछूत की तो वह आज भी कायम है। जब तक जातिभेद, श्रेणी भेद कायम रहेगा छूआ छूत भी कायम रहेगा । क्या दिया इन नेताओ ने देश को ?

उत्तर— आप ने अम्बेडकर जी और गवर्नर जनरल के बीच जिस पत्र व्यवहार की बात कही है वह मेरी जानकारी में नही है। तामगडे जी उस संबंध में ज्यादा बता सकते है। स्वतंत्रता संग्राम में अम्बेडकर जी का क्या योगदान रहा है, वह भी मेरी जानकारी में नही है। मेरी जानकारी के अनुसार अम्बेडकर जी स्वतंत्रता के पूर्व भी अपनी व्यक्तिगत राजनैतिक महत्वाकांक्षा में लगे रहे, तथा स्वतंत्रता के बाद भी यह सच है कि जातिवाद का विष बीज अम्बेडकर जी ने ही बोया था।जो हजारो वर्षो पूर्व समाज में सवर्णो द्वारा किए जा रहे अत्याचार का समाधान न होकर वर्ग निमार्ण, वर्ग संघर्ष की दिशा में बढता गया। मै मानता हूॅ कि अम्बेडकर जी प्रतिशोध की ज्वाला में जल रहे थे। जो किसी महापुरूष के लिए उचित नही हो सकता। नेहरू जी ने अपने नाम के सामने पंडित लिखा, यह अच्छी बात न होते हुए भी बुरी बात नही थी।लेकिन अम्बेडकर जी ने जिस तरह संविधान का दुरूपयोग किया वह वास्तव मे

गलत कार्य था। मुझे तो ऐसा लगता है कि कुछ अम्बेडकर वादियो को छोडकर शेष समाज अम्बेडकर जी को खलनायक के रूप में मानना शुरू कर देगा। तामगाडगे जी के उत्तर की प्रतीक्षा है।

स्वतंत्रता संघर्ष मे योगदान का जो प्रश्न आपने अंबेडकर जी से किया है वही प्रश्न यदि संघ परिवार से भी किया जाय तो उत्तर दोनो का एक होगा। स्वतंत्रता के पूर्व जिनकी भूमिका नगण्य थी। वही स्वतंत्रता के बाद इतने देश भक्त दिखने का नाटक करने लगे। जैसे कि वही लोग देशभक्त हो। यदि अंबेडकर जी ने जातिवाद का जहर घोला तो संघ परिवार ने भी साम्प्रदायिकता का जहर घोलने मे कोई कसर नही छोडी। इतिहास बताता है कि निमार्ण मे जिन लोगो की कुर्बानिया होती है उनके बाद उनकी सफलता के वारिस बनने वालो की भीड लग जाती हैं । यह कोई नयी बात नही है। इसलिये न आपको अंबेडकर जी से कोई शिकायत होनी चाहिये न मुझे संघ परिवार से ।

5 नरेन्द्र सिह जी बनबोई बुलंदशहर उत्तर प्रदेश

समाज में बलात्कार व यौन उत्पीडन गम्भीरतम समस्या है। आप तो इसे स्वपरिभाषित पॉच अपराधो में से एक मानते है। ज्ञान तत्व पाक्षिक में भी इस विषय में अक्सर विचार मंथन होता रहता है। गतांक 276 में आपने इस समस्या के उन्मूलनके विषय पर अपना सुझाव देते हुए कहा है कि समाज में यौन अपराधो पर नियंत्रण के लिए परिवार की सहमति से अविवाहित छोटे भाई को बडे भाई की स्त्री के साथ यौन इच्छा किसी सीमा तक पूरा करने की छूट होनी चाहिये। भारत परम्परागत विषमताओ का देश है और पूर्व काल की सामाजिक व्यवस्था में ऐसे उदाहरण भी मिलते हैं लेकिन उदाहरण समाज कें परिदृश्य में अपवाद से ज्यादा कभी नही बन पाये ताकि समाज उन्हे अपनी परम्परा के रूप में स्वीकार कर ले। स्थिति यह है कि यदि कोई ऐसी पहल समाज में कही से की जायेगी तो हमारा परम्परागत सामाजिक ढाचा ही , अपनी परम्परा की रक्षा के लिए इतना विध्वंसकारी हो सकता है कि कई वर्ष में होने वाले वीभत्स बलात्कारो के नुकसान से ज्यादा ऐसे सामाजिक संघर्ष में हो सकता है। यदि भारतीय समाज बडी सहजता से अपनी परम्पराओ को छोड सकता तो फिर आपके सुझाव कारगर हो सकते थे।लेकिन मेरा मानना है कि आपके सुझाव के संबंध मे मै कह सकता हूॅ कि इतनी सहजता से स्वीकार नही हो सकेंगे। वैसे भी सेक्स ऐसी प्राकृतिक क्षुधा है जिससे प्राणी मात्र ग्रस्त होता है लेकिन अधिकतर अवसरो पर अपनी परम्पराओ की रक्षा भी करता है। कृपया आप बताए कि आप समाज की सेक्स की क्षुधा मिटाने के सुझाव समाज को बताते है या बलात्कार जैसे जघन्य अपराध समाज के ऑचल से घटाने का उपाय बतााना चाहते है। अपनी राय स्पष्ट करे।

6–उदय करण सुमन, रायसिह नगर, जिला– गंगा नगर, राजस्थान–

प्रश्न– आप लिखते है कि महिलाओ का विवाह किसी व्यक्ति से करने की अपेक्षा परिवार से करने की व्यवस्था करनी चाहिए। छोटा भाई परिवार की अनुमति से बडे भाई कि पत्नी का उपयोग भी कर सके जबतक उसकी शादी न हो जाय।

इस विचार से लगा जैसे नारी एक जीवित प्राणवान उर्जा संपन्न मानवीय जीवन से ओत प्रोत व्यक्तित्व नही बल्कि उपयोग की चेतना शून्य कोई कठपुतली है जिसे पुरूष जब चाहे नचा लें।

मेरे मन में ऐसे कुछ विचार उत्पन्न हुए है जिनका समाधान चाहूॅगा दे सके तो आभारी होउगॉ।

1–नारी कमनीयता एवं मातृत्व गुणो के कारण पुरूषो से कही अधिक श्रेष्ठ है, फिर उसे इस प्रकार उपयोग की वस्तु की तरह इस्तेमाल करना कहॉ तक न्याय संगत है?

2–मान लो किसी परिवार के चार भाई बडे भाई की शादी हो जाने के पश्चात तीन छोटे भाई परिवार की अनुमति से उसका उपयोग करने लगें तो नारी जीवन नरकीय नही हो जायेगा?

3–चारो भाईयो की शादी हो जाने के पश्चात भी दूसरे तीसरे भाई जो नारी का उपयोग करते रहे , फिर ऐसा नही करेंगे – इस व्यवस्थापर अंकुश कैसे लगेगा?

4– बडा भाई जिसकी पत्नी का उपयोग छोटे भाईनिरन्तर करते रहे , वह छोटे भाई की पत्नियो का उपयोग करना चाहेगा, तो परिवार उसे किस आधार पर रोकेगा?

5–बडे भाई का विवाह तो हो गया, शेष भाइयो के विवाह में कोई व्यवधान पैदा हो जाये तो क्या जीवन भर शेष सभी भाई बडे भाई की पत्नी का उपयोग करते रहेगें,ऐसे में सन्तान के पितृत्व की पहचान कैसे होगी तथा संपत्ति का बटवारा कैसे होगा?

6–मान लो चारो की शादी हो भी जाय, रूप गुण एवं यौवन के कारण जो पत्नी अधिक आकर्षक होगी ,सभी भाई क्योकि पहले भी उपयोग करते रहे है बाद में उसका सामुदायिक उपयोग करना चाहे तो उन्हे कौन रोकेगा?

7–आज भी कन्या भ्रूण हत्या के कारण चालीस लाख कन्याओ को कोख में मार दिया जाता है जब एक पत्नी का उपयोग दूसरे भाई भी करने लगेंगे तो मॉ बाप ऐसी स्थिति में न चाहते हुए भी भ्रूण हत्या करने लगे तो स्थिति में कितनी विस्फोट हो जायेगी। कौन चाहेगा एक पत्नी परिवार की पत्नी भी हो?

उत्तर– स्त्री और पुरूष के आपसी संबंध एक दूसरे के पूरक के रूप में होते है।स्त्री को पुरूष की आवश्यकता होती है तथा पुरूष को स्त्रियो की । इस आवश्यकता की पूर्ति की स्वछंदता पर नियंत्रण के लिए ही विवाह का सामाजिक बंधन लगाया गया।सामान्य स्तर पर एक पुरूष तथा एक स्त्री की व्यवस्था ही आदर्श मानी जाती है। किन्तु विशेष स्थिति में पुरूष या स्त्री में से कोई एक की संख्या अधिक हो जाती है तथा उसके परिणाम स्वरूप कुछ स्त्री या पुरूष अविवाहित रहने लगते है तो ऐसे समय में समाज की कुछ व्यवस्था करनी पडती है। ऐसी ही आपात कालीन व्यवस्थाओ में बहुपत्नि प्रथा या बहुविवाह कन्या भ्रूण हत्या सती प्रथा देव दासी प्रचलन आदि को एक बुराई होते हुए भी स्वीकार किया गया। इसी तरह जब महिलाओ की संख्या कम तथा पुरूषो की बढ जाती थी तब नगर वधु सरीखी बुराइयो को भी स्वीकार करना पडता था। उस समय वैश्यावृत्ति जैसी बुराईयो में भी ढील देनी पडती थी। परिस्थिति के अनुसार आदर्शो में संशोधन की परम्परा रही है।

वर्तमान समय में महिलाओ का अभाव है । पुरूष कुवॉरे रह रहे है। बलात्कार बढ रहे है। यदि किसी बुराई को आपात कालीन व्यवस्था के रूप में स्वीकार नही किया गया तो समाज में कुछ वर्षो बाद महिलाओ कि छीना झपटी होगी । महिलाओ के लिए युद्ध होगे जिन्हे हम अधिक बुराई के रूप में स्वीकार करने को बाध्य होगें।इस दृष्टि से ही मैने यह सुझाव दिया है।यह कहना पूरी तरह गलत है कि पुरूष अपनी वासना पूर्ति के लिए महिलाओ का उपयोग करते है । यदि यह बात सच होती तो अनेक लडकियॉ पुरूषो के साथ परिवार छोडकर जाने को तैयार नही होती। जितनी आवश्यकता पुरूषो को है उतनी ही आवश्यकता महिलाओ को भी है। पुरूषो के खिलाफ किया जाने वाला दुष्प्रचार घातक परिणाम देगा।सेक्स एक मात्र ऐसी क्रिया है जिसमे सलंग्न दोनो पक्ष एक साथ एक समान संतुष्ट होते है। यदि आप को मेरे सुझाव की अपेक्षा कोई और अच्छा सुझाव समझ में आता है तो आप देने की कृपा करे । यदि वेश्यालयो का प्रचलन बढाया गया तो वह भी एक अच्छा सुझाव हो सकता है किन्तु वह सुझाव मेरे सुझाव से अधिक बुरा होगा।

आप ने संतान का प्रश्न उठाया है तो मेरे विचार से संतान तो किसी भी परिवार में किसी दम्पत्ति की नही होती। कोई भी संतान जन्म लेते ही उस परिवार का सदस्य है जिस परिवार में उसने जन्म लिया है। आपने प्रश्न उठाया है कि यदि विवाह के बाद ऐसा अनैतिक संबंध चलता है तो क्या होगा। मेरे विचार से यदि ऐसा होता है तो वह परिवार की आंतरिक समस्या होगी समाज की नही।जब तक परिवार का कोई सदस्य इस संबंध में समाज के पास शिकायत नही करता तबतक समाज को उसके आंतरिक मामलो में हस्तक्षेप नही करना चाहिए।

सम्पत्ति के बटवारे के विषय में आपने कुछ प्रश्न उठाये है। सम्पत्ति तो पूरे परिवार की सामूहिक होगी जिसमे परिवार के प्रत्येक सदस्य का समान अधिकार होगा। नई व्यवस्था में व्यक्ति समाज की एक इकाई न होकर व्यक्ति परिवार की इकाई होगा और परिवार समाज का। महिलाओ का अभाव महिलाओं की मॉग बढा देगा।महिलाओ के लिए दहेज प्रचलित हो जायेगा। कन्या भ्रूण हत्या अपने आप रूक जायेगी । थोडा सा समाज में महिलाओ का महत्व बढने दीजिए आप देखेगें कि महिलाओ का अभाव अपने आप कम होने लगेगा।

मेरा यह नही कहना है कि आदर्श व्यवस्था मानकर समाज प्रोत्साहित करे क्योकि यह समाज का विषय न होकर परिवारो का आंतरिक मामला है। मै तो सिर्फ इतना ही कह रहा हूॅ कि सेक्स को एक सीमा से अधिक संवेदनशील मुद्दा न बनाया जाय। साथ ही मेरा यह कथन है कि यदि मजबूरी में किन्ही परिवारो में गुप्त रूप से ऐसी व्यवस्था होती है तो समाज में इसकी आलोचना न की जाय। मै इसे आपातकालीन व्यवस्था के रूप मे देख रहा हूॅ न कि परंपरा के रूप मे । मै इस व्यवस्था को प्रचारित भी नही करना चाहता। मै तो सिर्फ इतना ही चाहता हूॅ कि मजबूरी मे यदि ऐसा होता है तो इसे होने दिया जाय। फिर भी यदि इससे अच्छी कोई ब्यवस्था का सुझाव आता है तो मै उसपर भी चर्चा करने के लिये तैयार हूॅ।

7 चिन्मय व्यास पो0–माल देवता देहरादून उत्तरांचल

प्रश्न–आंध्र की विशेष समस्या है कि तेलंगाना भाग विभाजन चाहता है, पूर्वी उत्तरी आंध्र विभाजन नही चाहता। पहले तेलंगाना में तीब्र आन्दोलन हुआ उसे केन्द्रीय कैवीनेट ने मान्य किया तो अब पूर्वी व उत्तरी आंध्र में तीब्र आन्दोलन हो रहा हैविजली रेल पानी सब ठप्प।

इस परिस्थिति में क्या करना चाहिए? ज्ञान तत्व को अपना अभिमत प्रकट करना चाहिए। प्रधानमंत्री पद की इच्छा वाले किसी भी व्यक्ति ने समस्या का हल नही बताया। मेरे विचार से ऐसी स्थिति में जनमत संग्रह ही सर्वोत्तम हल है। यदि कुल वोटर संख्या का आधे से अधिक भाग या कुल दिये गये मतो का दो तिहाई से अधिक भाग आंध्र का विभाजन चाहता है तो वैसा किया जावे अन्यथा नही।

देश की और संसार की प्रमुख समस्याओ के बारे में ज्ञानतत्व के पाठको के व संपादक के विचार छपते रहना चाहिए।

उत्तर– तेंलगाना और आंध्र के विभाजन की समस्या किसी भी रूप में न सामाजिक है न इस आंदोलन से समाज का कोई संबंध है। यह एक शुद्ध राजनैतिक समस्या है जो राजनेताओ ने अपने अपने सत्तालोभ केलिये पैदा की है। उन्होने आग तो लगा दी है और उस आग से उन दोनो का लाभ होना निश्चित है भले ही उससे समाज का कितना भी नुकसान क्यो न हो जाये। जनमत सग्रह इसका समाधान नही है क्योकि पूरे आन्ध्र मे जनतम सग्रह होगा तो तेलंगाना की पूरी आबादी तेलंगाना के पक्ष मे हो जायेगी और आन्ध्र की आन्ध्र के पक्ष मे तब निपटारा कैसे होगा क्योकि उस स्थिति मे आन्ध्र की विजय निश्चित दिखती है। मेरे विचार से यदि सत्ता का विकेन्द्रीयकरण हो जाय और प्रदेश के अधिकार जिलो को तथा जिलो के गांवो को दे दिये जाये तो राजनेताओ की शक्ति अपने आप घट जायेगी तथा स्वाभाविक है कि राजनेता कोई नया व्यापार शुरू कर देंगें।

8 खुर्शीद अनवर जनसत्ता 28 अक्टुबर से

विचार– धार्मिक कटटरता जब तमाम सीमाएं तोडने लगती है तो सबसे पहले महिलाओ को निशाने पर लेती है। कभी उनका पूरा दमन करके कभी उनको इस्तेमाल करके। जो बातें वेदो मे या मानस मे कही नजर न आये उनको मनगढंत स्मृतियो मे और रोज पेदा होने वाले उपदेशो मे देख ले। ताज्जुब है कि इनमे समानता भी बहुत होती है।

आठ अप्रैल 1994 को संयुक्त राष्ट्र ने मानवाधिकारो से संबंधित रिपोर्ट पेश की, जिसमे अफगान तालिबान ने महिलाओ पर जो बंदिशे लगाई उनकी एक लंबी सूची है। यहां उनमे से कुछ बिंदु पेश किये जा रहे है। पुरूष डांक्टर के पास जाने पर पूरी पाबंदी । सिर से पैर तक बुर्के मे ढके रहना। घर से बाहर काम करने पर पूरी पाबंदी ।पुरूष दुकानदारो से सामान न खरीदना। अगर टखने खुले दिख जाये तो कोडो से उनकी पिटाई। उन्हे कोडे मारना। अगर वे तालिबान द्वारा निर्धारित लिबास न पहने तो सार्वजनिक रूप से उनकी पिटाई । पति के अलावा किसी अन्य पुरूष मे संबंध पर संगसार करके मार देना। जोर से हंसने पर पाबंदी। रेडियों टेलीविजन या किसी सार्वजनिक स्थल पर महिलाओ की मौजूदगी पर पाबंदी। साईकिल मोटर साइकिल और कार चलाने पर पाबंदी। ईद या अन्य त्यौहारो पर या मनोरंजन के लिये महिलाओ के इकठठा होने पर पाबंदी। तमाम शीशे की खिडकियों पर पेंट करवाया जाना। जिसमे औरते बाहर न देख सके। यहां सारे बिंदु देना संभव नही क्योकि सूची बहुत लंबी है। यानी महिलाओं का सिर्फ और सिर्फ चलती फिरती लाश मे तब्दील कर देना। यहां दो तथ्यो का उल्लेख आवश्यक है। पहला यह कि इनमे से अधिकतर शरिया कानून महिला उत्थान की अलंबरदार मानी जाने वाली रब्बानी मसूद सरकार के जमाने मे अफगानिस्तान मे नाफिज किये गये। जिनके कुछ उदाहरण यहां पेश किये जाएगे। दूसरी अहम बात यह है कि महिलाओ के लिये बने इन तालिबानी कानूनो के आधार पर सउदी अरब के बहावी आस्था के कानून और स्कूलो के पाठयक्रम है।

रब्बानी मसूद सरकार के दौरान महिलाओ पर बहावी तालिबानी क्रूरता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि 1978 से मसूद ने सोवियत संघ के विघटन के बाद गुलबुददीन हिकमतयार से जंग के दौरान सउदी अरब ने सयाफ और इत्तेहाद ए इस्लामी को जब वहावी विचार धारा फैलाने के लिये समर्थन दिया तो मसूद ने उसका स्वागत किया और फिर सिलसिला चला वहावियत की स्त्री विरोधी विचारधारा के अफगानिस्तान मे प्रसार का और संयुक्त राष्ट्र मे पेश किये गयें दस्तावेज मे मसूद की भागीदारी की सनद। आठ अप्रेल 1994 को प्रस्तुत इस रिपोर्ट मे मसूद सरकार की बडी भूमिका थी। औरतो पर जुल्म जो सामने न आया वह यह है कि 1979 से लेकर अगले पांच वर्ष तक उच्च स्तर तक महिला शिक्षा नब्बे फीसदी हो चुकी थी। बंदिशों के आने के बाद 1992–93 तक महिला शिक्षा घट कर तीस फीसदी हो गई। जबतक इसमे भी वे महिलाएं शामिल है जिन्है शिक्षा 1979 के बाद पांच वर्षो मे मिली थी ।

सी आई ए ने मसूद की चे गेवारा से तुलना की। लेकिन देखिये यही जिहादी तालिबान इन्ही महिलाओं का इस्तेमाल अपने मकसद के लिये कैसे करते है। तालिबानी कारी जिया रहमान ने, जो कुनार और नुरिस्तान (अफगानिस्तान) और बारौर और मोहम्मद (पाकिस्तान) मे महिला आत्मघाती दस्ते का प्रशिक्षण शिविर चलाता है, अब तक कई महिलाओ को आत्मघाती हमले मे इस्तेमाल किया है। यहां से फरार दो लडकियों ने इसकी सूचना पाकिस्तान सरकार को दी। लेकिन हमेशा की तरह पाकिस्तान ने कोई कार्रवाई नही कीं इसके फौरन बाद 21 जून 2010 को कुनार मे महिला आत्मघाती हमला हुआ। कारी जिया रहमान ने खुशी का इजहार कते हुए हमले की तस्दीक की। इसके बाद 24 जून 2010 को बाजौर मे अगला महिला आत्मघाती हमला हुआ जिसमे चालीस नागरिको की जान गई। सिर्फ 2010 मे पख्तूनख्वा के खैबर सूबे मे बमबारी की उनचास घटनाए हुई जिनमे बाजौर पाकिस्तान मे विश्व खाद्य कार्यक्रम पर हुआ एक महिला आत्मघाती हमला शामिल नही है।

वर्ष 2011 से बुर्का बमबारी का दौर शुरू हुआ। इसे तालिबान ने मुजाहीद सिस्टर्स का नाम दिया। इस नई तर्ज के हमले मे बुर्के मे अक्सर मर्द भी आकर बमबारी करते रहे लेकिन मुख्यतः आत्मधाती हमलो की जिम्मेदारी औरतो की ही रही। चार जून 2011 को कुनार अफगानिस्तान मे फिर महिला आत्मघाती हमला हुआ, जिसकी जिम्मेदारी लेते हुए तालिबान ने कहा कि मुजाहिदा सिस्टर्स ने यह काम अंजाम दिया। इसी साल अगला हमला डेरा इस्माइल खा मे हुआ । महिला आत्मघाती हमलों का यह सिलसिला रूका नही। ये वही इस्लाम के ठेकेदार है जिनके अनुसार महिलाओ के लिए अनेक नियम बने है।

आत्मघाती हमलो के समय ये नियम कहॉ चले जाते है? औरतो के प्रति इस दोहरे रवैए को तालिबान की मक्कारी और इनके सरपरस्त वहाबी पैरोकारो के दो मुहेपन के संदर्भ में देखा जाना चाहिए। एक तरफ सउदी अरब की वहावी सरकार और इनके आतंकी संगठन महिलाओ को गुलाम से बदतर जिन्दगी देने वाले नियम बनाते है।

दूसरी तरफ यही औरते मुजाहिदा कहलाने लगती है। इनकी हैवानियत का दूसरा रूख देखिए। जरा कोई आलीम बताए कि किस कुरान या किस हदीस में लिखा है कि मासूम बच्चे के गले में बम लगाकर उसे इंसानी या खुद का कत्ल करने को तैयार करो? लेकिन इनका इसलाम यही करता है। मासूम गरीब बच्चो को और उनके घर वालो को जन्नत का ख्वाब दिखाकर और कुछ पैसे देकर आत्मघाती हमले के लिए तैयार करना अलकायदा और तालिबान का ऐसा घिनौना काम है जिससे सारी मानवता का सिर शर्म से झुक जाना चाहिए। 4नवम्बर 2008 को संयुक्त राष्ट्र ने अपनी रिपोर्ट में न केवल इस बात की तस्दीक की बल्कि इसकी भर्त्सना भी की कि तालिबान और अलकायदा दस से तेरह साल के बच्चे को आत्मघाती दस्ते में शामिल करके उन्हे प्रशिक्षण दे रहे है।

अफगानिस्तान की सरकार ने भी सार्वजनिक रूप से यह स्वीकार किया है कि ये बच्चे सात हजार डालर से चौदह हजार डालर की कीमत पर खरीदे जाते है और मॅा बाप को कहा जाता है कि सिर्फ पैसे नही मिलेंगे, आप का बेटा इस्लाम के नाम पर शहीद होकर सीधे जन्नत पहुॅचेगा।

अलकायदा और तालिबान के लोग बेशर्मी की किस हद तक जा रहे है इसका अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि कुनार और नूरिस्तान इलाके में बच्चा जब आत्मघाती कारवाई के लिए तैयार हो जाता है तो उसे दूलहे की तरह सजा कर घोडे पर बैठा कर पूरे गॉव में घुमाया जाता है, और गॉव के लोग , जिनमे कुछ तालिबान के डर की वजह से या फिर उनके समर्थन होने के कारण , बच्चे के मॉ बाप को मुबारकवाद देने आते है। इन कम उम्र बच्चो की संख्या पॉच हजार से सात हजार के बीच खुद पाकिस्तान सरकार ने स्वीकार की है।

पाकिस्तान के गृहमंत्रालय (इंटीरियर मिनिस्ट्री) के अनुसार पिछले दो साल में 2488 आतंवादी घटनॉए घटी है जिनमें चार हजार लोग मारे गये है। इनमें से अधिकतर आत्मघाती हमले कमसिन बच्चो द्वारा किए गए है।तालिबान ने फिदायीन ए इस्लाम नाम से पाकिस्तान और अफगानिस्तान की सीमा पर वजीरिस्तान में ऐसे तीन प्रशिक्षण शिविर तैयार किए हुए है जिनमें हजारो की तादाद में कम उम्र बच्चे प्रशिक्षण पा रहे है। आतंकवाद के आज तक के इतिहास में इतने बर्बरता भरे सोच की मिसाल मिलना नामुमकिन है। इस पूरे इलाके में फैली अशिक्षा और अकल्पनीय गरीबी का फायदा उठा कर ये सारे काम अंजाम दिये जाते है।वहाबियत का यह चेहरा किस कोण से इस्लामी चेहरा हो सकताहै? गरीब का पेट भरना , गरीबी दूर करना, अशिक्षा दूर करना इन्हे इनका इस्लाम नही सिखाता है, बल्कि इनका इस्लाम सिखाता है, ऐसी स्थिति का फायदा उठा कर मासूम इंसानो का खून बहाना । यह नया इस्लाम है, वहाबी इस्लाम । इसकी जड मजहब नही राजनीति है। और जब मजहब और राजनीति का मेल होता है तो इंसानियत मौत के दरवाजे पर नजर आती है। वहाबियत और इनके आतंकी संगठन मजहब के नाम पर राजनीतिक इस्लाम स्थापित कर रहे है जिस पर लगाम नही लगी तो एक नये फासीवाद का जन्म निश्चित है।

उत्तर– आप ने इस्लामिक कटटर वाद की जो पोल खोली है वह स्वागत योग्य है। मैने ऐसे ही विचार अखलाख अहमद उस्मानी भाई के भी प्रथम प्रवकता में पढे। यदि थोडे भी मुसलमान इस तरह तटस्थ भाव से कट्टरवाद की समीक्षा करते रहे तो धार्मिक कट्टरवाद की रोकथाम संभव है।

ऐसा नही है कि मुसलमानो में ही देवबंदी अथवा तालिबानी पाये जाते है। हिन्दूओ में भी कुछ संगठन ऐसे है जो ऐसे ही कट्टरवादी विचार रखते है। भला हो उस पुलिस वाले हेमन्त करकरे का जिसने प्रज्ञा ठाकुर असीमानंद की पोल खोलकर अन्य हिन्दूओ को इस कलंक से बचा लिया अन्यथा आगे हिन्दूओ को भी उसी तरह बदनामी झेलनी पडती जिस तरह वर्तमान में सारी दुनिया में मुसलमानो को झेलनी पड रही है। मेरी हार्दीक इच्छा है कि देश भर में कुछ और मुसलमान आगे आवे और धर्म निरपेक्षता को मजबुत करने में इस्लाम की भूमिका का सहयोग करे। मै आश्वस्त करता हूँ कि मेरे सरीखे बडी संख्या में हिन्दू हिन्दुओ को आतंकवाद की दिशा में जाने से पूरी ताकत के साथ रोकने का प्रयास करेंगे । कट्टरवादी हिन्दू कट्टरवादी मुसलमानो का उदाहरण देकर शांति प्रिय हिन्दुओ को भडकाते है दूसरी ओर कट्टरवादी मुसलमान कट्टरवादी हिन्दुओ के कथन का उदाहरण देकर शान्तिप्रिय मुसलमानो को भडकाते है।सभी आतंकवादी संगठनो का उदाहरण एक ही होता है कि शांतिप्रिय मुसलमान और शांतिप्रिय हिन्दू किसी तरह उनके गिरोह में शामिल हो जाय। राजनीति से जुडे लोग भी एक ओर तो शांतिप्रियता की बात करते है तो दूसरी ओर किसी न किसी गिरोह की पीठ पर हाथ रख कर उनके हाथ मजबूत करते है। हमे चाहिए की ऐसे राजनेताओ का पर्दाफांश करे। आपने महिलाओ की चर्चा की है। यदि महिला किसी परिवार की सदस्य है तो महिलाओ के लिये कोई कोड बनना परिवार का आंतरिक मामला है चाहे वह बुर्के की बात हो अथवा टेलिविजन देखने की अथवा कोई और । परिवारो से अलग का कोई व्यक्ति अथवा कोई संगठन चाहे वह धार्मिक हो या राजनैतिक, परिवार के आंतरिक मामलो के लिये कोई कोड नही बना सकता। आप भी नही और आतंकवादी भी नही किन्तु परिवार महिलाओ के मौलिक अधिकार पर कोई आक्रमण नही कर सकता। अर्थात यदि कोई महिला ऐसे आदेशो को अमान्य करके परिवार छोडना चाहे तो उसे छोडने की स्वतंत्रता होगी। परिवार एक संगठन है। परिवार के सभी सदस्यो को या तो परिवार के नियम मानने होंगे अथवा परिवार छोडकर जाना होगा। अतः यदि वहावी ऐसे नियम परिवारो की सहमति से बनाते है तो कोई अपराध नही है और यदि ऐसे नियमो के उलंघन के लिये परिवार से बाहर के लोग हस्तक्षेप करते है तो वह पूरी मानवता के खिलाफ अपराध होगा।

9 – सुनिल तामगाडगे नागपुर महाराष्ट्र–

समीक्षा – आपका 276 वा ज्ञान तत्व अंक दिनांक 11/10/13 को मिला। इसके लिये मन पूर्वक धन्यवाद और मेरी बात को आप समझते हुए अपने अंक मे पत्र रूप मे छापते है । इसके लिये मै आपका तहे दिल से शुक्र गुजार हूँ। इस अंक के पृष्ठ 10 पर आचार्य पंकज जी ने जो बात कही है मेरे लिये इसका जबाब देना जरूरी हो गया है। इसलिये मै आचार्य जी को विनम्रता पूर्वक कहना चाहूँगा कि आर्यो के विषय मे दयानंद गांधी तथा अंबेडकर जी का उदाहरण भले ही निर्णायक न भी हो पर क्या जिन्हे आप लोक मान्य कहते है, उन बाल गंगाधर तिलक का उदाहरण भी नही माना जायेगा। जहां वे कहते है कि आर्य उत्तर पूर्व युरोप से आये या इसके बाद विनायक दामोदर सावरकर कहते है कि हिन्दुत्व या हिन्दू का आर्यावर्त अनार्यावर्त से पृथक है उसके बाद इसी बात को और ज्यादा पुक्ता गुरू गोलवलकर करते है। वे अपने अवर नेशन हुड डिफाइंड मे कहते है कि आर्यो का हिन्दु राष्ट्र ही हिन्दुत्व को जीवित रख पायेगा। इस प्रकार सावरकर गोलवरकर और तिलक जैसे कटटर हिन्दुत्व के समर्थक आर्यो की (अ) सभ्यता को अनार्यो की सभ्यता से अलग करते है। इसके आगे प्रोफेसर नवल वियोगी अपनी नाग संस्कृति नामक किताव मे उदाहरण सहित स्पष्ट करते है कि हडप्पा और मोहन जोदडो की सभ्यता किस प्रकार आर्यो द्वारा ध्वस्त की गयी । अतः आचार्य जी से निवेदन है कि वे इन सब बातो पर गौर करे । यह आशा रखते हुए एक बात कहूगा । हम एक दूसरे के विरोधक नही सत्य साधक है।

उत्तर–आपने आचार्य पंकज जी के उत्तर की समीक्षा की है और कुछ तर्क भी दिए है। सच बात यह है कि मुझे इतिहास या भूगोल का बहुत कम ज्ञान है। आर्य कब आये कहॉ से आये , बाहर से आये या यही के निवासी थे, इस संबंध में मुझे कोई जानकारी नही है। आपकी और आचार्य जी की

ऐतिहासिक चर्चा से मेरा भी ज्ञान बढता है। आपके पत्र का उत्तर आचार्य जी ही दे सकेगे। आप का उत्तर आचार्य जी तक पहूँचा दिया जायेगा। अन्य पाठक भी इस संबंध मे लिख सकते है ।

10 डा0 पुनम शर्मा रतनमठ चुरू राजस्थान

प्रश्न–आपके विचार सुलझे हुए होते है आप बताने की कृपा करे कि आज बालिकाओ की स्थिति जो है उसमें सम्पूर्ण स्त्री जाति का वजूद खतरे में है। इस संबंध में आप का विचार क्या है?

उत्तर– जब समाज में महिलाओ की संख्या पुरूषो से अधिक होती है तो महिलाओ का सम्मान घटता है, और जब महिलाओ की संख्या कम होती है तो महिलाओ का सम्मान बढता है। जब महिलाएं अधिक हो गयी , तब बालिका हत्या, दहेज, विधवा विवाह पर प्रतिबंध , सती प्रथा, देव दासी प्रथा, बहुविवाह जैसी भयानक कुरीतियो ने जन्म लिया। वर्तमान समय में ऐसी कुरीतियो का ही परिणाम है कि परिवार में लडकियां बोझ बनती चली गयी तथा उनकी आबादी भी घटने लगी। आज ऐसी भयानक कुरीतियो में से अनेक का तो लोप हो गया है तथा कुछ आंशिक रूप से है, जो थोडा सा जनसंख्या का अनुपात और बदलने से अपने आप समाप्त हो जायेगी। दहेज प्रथा का तो यह हाल है कि अनेक गरीब परिवारो के माता पिता को लडकियो के बदले लडके वाले दहेज देना शुरू कर दिये है। मैं स्पष्ट रूप से देख रहा हूँ कि लडकियो की घटती जनसंख्या ने जाति प्रथा को भी चूर चूर करना शुरू कर दिया है। अगले पॉच वर्षो में ही जाति प्रथा टूटनी शुरू हो जायेगी। अतः महिलाओ की घटती आबादी यदि कोई समस्या है तो कोई समाधान भी है। यह जरूर है कि प्रकृति द्वारा किए जा रहे समाधानो का कुछ राजनेता या सामाजिक कार्यकर्ता श्रेय लेना शुरू कर देते है। मै स्पष्ट जानता हूँ कि दहेज के खिलाफ बनाये गये कानूनी या सामाजिक विरोधो से दहेज प्रथा नही रूकी है। उल्टा दहेज का हल्ला कर कर के लडकी वालो का मनोबल तोडना सामाजिक हानि है। फिर भी ये अज्ञानी लोग ऐसा करते रहते है। कन्या भ्रूण हत्या पर किसी प्रकार के किसी प्रतिबन्ध की आवश्यकता नही है। अधिक से अधिक एक दो प्रतिशत ही महिलाओ की और आबादी घटेगी उसके बाद अपने आप सामाजिक नियम बदलेंगे। लडकियो के माता पिता का मनोबल उॅचा होगा। हो सकता है कि कुछ मात्रा में घर जमाई की प्रंथा भी शुरू हो जाय। क्या होगा पता नही किन्तु कुछ न कुछ अवश्य होगा। इसके लिए निश्चिंत रहें। स्त्री जाति का वजूद खतरे में पडेगा तो पुरूष उससे अछूते नही रहेंगे क्योकि न पुरूष अकेले संतान पैदा कर सकते है न स्त्री। अतः इस समस्या को बहुत बडी समस्या के रूप में मानने या प्रचलित करने से लाभ कम और हानि अधिक होगी।

11– श्री सिद्धार्थ कुमार मिश्रा नेशनल कम्पयुटर कालेज मनगवा रीवा म0प्र0,

आपका 15/8/13 का पत्र प्राप्त हुआ । आपकी कृपा दृष्टि हेतु साधुवाद । आपके ज्ञान तत्व मे सारगर्भित सामाजिक एवं रचनात्मक तर्क संगत लेख होते है । पढकर लगता है कि सागर्भित यथार्त विचारो की प्राप्ति हुई। धन्यवाद स्वीकार करे। मानव विचारो की दुनिया मे भटकने वाला एक प्राणी समूह होता है। चाहे वे विचार यथार्थ हो या कल्याणकारी हो या छल प्रपंच से युक्त भटकाने वाले हो। मनुष्य हमेशा विचारो से ठगा हुआ है । चाहे राजनीतिक रूप से चाहे धार्मिक रूप से चाहे सामाजिक रूप से। पाखंड के पर्दा फास हेतु धन्यवाद । मेरी तरफ से संसार की सम्पूर्ण मानव जीवन कम से कम एक रूपता रखते हुए भी जीवन शैली मे विभिन्नता ग्रहण करते आया है। दृष्टा स्वयं क्रिया कलापो को देख परख रहा है। उसको विचारो के मकड जाल मे फसाने की क्या जरूरत है। यदि बाडी ही खेत चरने लगे तो खेत रंक्षण का उपाय क्या है। मेरी दृष्टि से साधु ऐसा चाहिये जैसे सूप सुहाय । सार सार को गहि रहे थोथा देय उडाय। त्याग ही तप है । जो त्यागी नही वह तपस्वी नही। जो कामेक्छा पर सयम नही कर पाता वह पारिवारिक है। उसे सामाजिक संत का चोला धारण करना पाप ही कहा जायगा। अंततः आपके कार्यो की मै सराहना करता हूँ।

उत्तर– अभी तक दुनिया कोई स्पष्ट पहचान नही बना सकी है जिसके आधार पर किसी व्यक्ति को अच्छा या बुरा कह दिया जाय जब तक कि उसके समाज विरोधी क्रिया कलाप सामने नही आ जाते है। यहॉ तक कि हम आशाराम सरीखे व्यक्ति को भी नही पहचान सके क्योकि हमारे पास उनमे आंतरिक क्रियाकलाप तथा वाहय क्रियाकलाप के अंतर के जानने का कोई माध्यम नही था। ऐसे चतुर लोग समाज को और भी ज्यादा गुमराह करते रहते है। जिससे उनकी पोल ढकी रहे। चरित्र की बाते करने वाले ऐसे साधु संतो से और भी ज्यादा सतर्क रहने की जरूरत है, जो बडी बडी बात करके अपना दुष्चरित्र छुपाते रहते है।

1 काश इंडिया डांट काम से

नितीश कुमार द्वारा नरेंद्र मोदी के झूठ का पोष्टमार्टम–

नरेंद्र मोदी ने बिहार में जमकर भाषण दिया। ऐसा लगता था कि नरेंद्र मोदी कही न कही बोलने में फसेंगे, किन्तु ऐसा नही लगता था कि वे जान बूझ कर झूठ बोलते है और वह भी ऐसा झूठ जो आसानी से पकडा जाय। अब तक किसी ने उनके भाषणो की सूक्ष्म विवेचना नही की थी। लेकिन बिहार में पहली बार नितीश कुमार ने उनके भाषण की सूक्ष्म विवेचना करके ऐसी धज्जियॉ उडाई की मोदी जी की बोलती बंद हो गयीं। मैने स्वयं भी मोदी जी का भाषण सुना और मैने भी उनका सिर्फ एक झूठ पकडा, जिसमे उन्होने कहा था कि नितीश कुमार ने जयप्रकाश को छोड दिया और जो जे पी को छोड सकता है वह बीजेपी को छोडने में कितनी देर लगायेगा। जे पी आंदोलन में नरेंद्र मोदी कितने शामिल थे ये तो वे जाने किन्तु मै तो पूरी

तरह शामिल था और उन्नीस महीने जेल में भी रहा , यह सब जानते है। सच्चाई यह है कि नितीश कुमार ने जे पी को कभी नही छोडा । किन्तु आज जब नितीश कुमार ने मोदी भाषण की सूक्ष्म विवेचना करके उनके झूठो के साथ उनके अज्ञान की पोल खोलने की भी झडी लगा दी तो मैं भी देखता रह गया। नरेंद्र मोदी ने तक्षशिला को बिहार का भाग बताया तो सिकंदर को गंगा किनारे आने का। मोदी जी ने चंद्रगुप्त को मौर्य वंश और गुप्त वंश में घपला करके झूठ बोला या अज्ञान का परिचय दिया ये तो वे जाने। अन्य कई बाते भी मोदी जी ने असत्य कही। कई बाते तो ऐसी थी जो तुकवंदी में कही गयी, किन्तु थी असत्य। इसके पहले लालू प्रसाद जी भी इसी प्रकार तुकबंदी के माध्यम से भीड जुटाने के अभ्यस्त थे जो अब कहॉ है पता नही फिर भी लालू प्रसाद इस तरह झूठ नही बोलते थे अथवा ऐतिहासिक भौगोलिक अज्ञान का परिचय नही देते थे जिस तरह मोदी जी ने दिया। प्रधानमंत्री द्वारा दिए गये भोज में नितीश के साथ बैठकर खाना खाने की असत्य बात कही। उससे यह साफ होता है कि वे जान बूझ कर झूठ बोलते है वैसे उनकी चालाकी के तो कई उदाहरण स्थापित हो चुके है किन्तु इस तरह झूठ बोलने के इतने साफ उदाहरणअब तक सामने नही आये थे।सिर्फ एक दिन के भाषण में दसो जगह झूठ पकडा जाना मोदी जी के लिए शुभ संकेत नही है। कोई व्यक्ति कुछ दिनो तक ढके छुपे असत्य बोल सकता है, किन्तु हमेशा के लिए असत्य नही चलता ।वह भी अगर बिहार में बोला जाय , बिहार के विषय में बोला जाय और नितीश कुमार सरीखे लोगो के बीच बोला जाय तो पकड में आने से बचना और भी कठिन हो जाता है। अब भी समय है कि मोदी जी लालू जी से भी आगे निकलने की अपनी छवि बनाने से बचे।

2 पटना बम विस्फोट में सिर्फ मुसलमानो का ही पकडा जाना–

पटना में नरेन्द्र मोदी की रैली के समय बम विस्फोट हुआ। जो लोग पकडे गये वे सब के सब मुसलमान है। इतिहास बताता है कि साम्प्रदायिक आतंकवादी घटनाओ मे अब तक पकडे गये लगभग सभी लोग मुसलमान है। कुछ घटनाओ में अवश्य कटट्रवरदी हिन्दू पकडे गये। जो लगता है कि ऐसी घटनाओ को करने की शुरूआत कर रहे थे। पिछले कुछ समय पहले कुछ मुसलमान नेताओ ने धर्म निरपेक्षता का मुखौटा लगाकर ऐसे आतंकवादी मुसलमानो के पक्ष में कुछ न कुछ बोलने का प्रयास किया।एक तर्क यह भी दिया गया कि आतंकवाद के नाम पर जेलो में बंद मुसलमानो में से कई बेगुनाह भी है। यह भी तर्क दिया गया कि आतंकवाद की घटनाओ में गिरफतार किए गये लोगो मे मुसलमान ही क्यो अधिक होते है? प्रश्न उठता है कि आतंकवाद की घटनाओ में यदि मुसलमान ही अधिक शामिल होते है तो गिरफतार किये गये लोगो में मुसलमान की अधिकता होने में प्रश्न क्यो उठाया जाता है।आतंकवाद में गिरफतार होने में आबादी के अनुसार क्या बटवारा उचित है? यदि पूरे भारत में सांप्रदायिक आतंकवाद की तुलना करे तो मुसलमानो की कुल आबादी 15 प्रतिशत है तथा हिन्दुओ की करीब 80 प्रतिशत है यदि हम मान ले कि पन्द्रह प्रतिशत मुस्लिम आबादी में न्यायालय से दोष सिद्ध आतंकवादियो की संख्या पन्द्रह है। मुकदमा झेल रहे मुसलमानो की संख्या 150 है और संदेह के आधार पर पकडे गये मुसलमानो की संख्या 400है। दूसरी और 80 प्रतिशत आबादी वाले हिन्दू में आतंकवाद के लिए दण्डित हिन्दुओ की संख्या शून्य है मुकदमे झेल रहे हिंदुओ कि संख्या पॉच है तो संभावित है कि संदेह के आधार पर गिरफतार हिन्दुओ की संख्या भी दस बीस से ज्यादा नही होगी। जो मुसलमान यह तर्क देते है कि संदेह के आधार पर पकडे गये निर्दोष मुसलमानो की संख्या अधिक है तो उन तर्क देने वालो की नीयत पर संदेह होता है कि उनकी सहानुभूति मुस्लिम आतंकवादियो के साथ है। उन्हे तो शर्मिंदा होना चाहिय था कि फिर पटना में आतंकवाद की घटनाएं हुई और उनमे भी मुसलमान पकडे गये, जिनमे हो सकता है कुछ निर्दोष भी हो। लेकिन सब कुछ साफ दिखते हुए भी ये साम्प्रदायिक मुस्लिम नेता कुछ दिनो बाद बडी निर्लज्जता से फिर से वही बात कहना शुरू कर देगे कि निर्दोष मुसलमान अधिक संख्या में जेलो में बंद क्यो है। दिग्विजय सिंह और स्वामी अग्निवेश सरीखे कुछ हिन्दू नेता भी हॉ में हॉ मिलाते है। किन्तु इनका उद्देश्य आतंकवाद का समर्थन न होकर मुस्लिम तुष्टीकरण तक सीमित होता है। आवश्यकता इस बात की है कि पटना की घटना से सबक लेते हुए हमारी सरकारे भविष्य में ऐसे कदम उठाये कि निर्दोष मुसलमान के नाम पर आतंकवाद का पक्ष लेने वाले मुस्लिम नेताओ को भी एक बार जेलो में बंद कर दिया जाय। मै सिर्फ मुस्लिम नेताओ तक ही सीमित नही हूँ। कानून तो सबके लिए बनेगा। जो हिन्दू नेता भी प्रज्ञा ठाकुर और असीमानंद के पक्ष में खडे होगे उनके साथ भी वैसा ही वर्ताव किया जायेगा । एक सीधा सा सिद्धांत है कि यदि कोई व्यक्ति पुलिस के द्वारा संदेहास्पद

है तो उसके पक्ष में सिर्फ और सिर्फ वही खडा हो सकता है जो या तो उसका वकील हो या उसका निकट सम्बन्धी हो या उसे व्यक्तिगत रूप से बेगुनाह निर्दोष मानता हो । यदि कोई अन्य व्यक्ति उसके पक्ष में खडा होता है तो अवश्य ही संदेह होता है कि कुछ न कुछ दाल में काला है स्पष्ट है कि न्याय और कानून में कानून की अपेक्षा न्याय का पक्ष लेना अधिक आवश्यक है। यदि पुलिस किसी अपराधी को गैर कानूनी तरीके से कही चौराहे पर खडा करके गोली मार दे तो उस अपराधी से असम्बद्ध व्यक्ति को उसके पक्ष मे नही बोलना चाहियें। उसे तो बिल्कुल नही बोलना चाहिये जो यह जानता है कि यह व्यक्ति वास्तव मे निरपराध नही है अथवा वास्तव मे अपराधी है। यदि कोई व्यक्ति यह सब जानते हुए भी न्याय की जगह कानून के पक्ष मे खडा होता है तो यह बात गलत है । आतंकवाद के मामले मे भी यही बात लागू होती है। मेरा सुझाव है कि सांप्रदायिक हिन्दुओ ने तो कुछ सबक सीखा है सांप्रदायिक मुसलमानो को भी इससे सबक सीखना चाहिये।

3 गैर कांग्रेस वाद और सामप्रदायिकता के नाम पर तीसरे मोर्चे की कवायत

पिछले दिनो दिल्ली मे कांग्रेस पार्टी तथा भारतीय जनता पार्टी को छोडकर अन्य दलो की एक संयुक्त बैठक हुई, जिसमे मायावती और ममता को छोडकर लगभग सभी दल शामिल हुए। बैठक का नेतृत्व वामपंथी दलो ने किया किन्तु नितीश कुमार और मुलायम सिंह ने बढचढ कर हिस्सा लिया। बैठक का उददेश्य नरेन्द्र मोदी के बढते आकर्षण के विरूद्ध अन्य दलो को एक जुट करना था। यह सही है कि नरेन्द्र मोदी के बढते आकर्षण से कांग्रेस सहित अन्य सभी दल भयभीत भी है और आतंकित भी। इतिहास बताता है कि भारत की राजनीति सिद्धान्तो पर नही बल्कि सुविधाओ पर चलती है। यदि कांगेस पार्टी का एक तरफा उभार होता है तो गैर कांगेस वाद का नारा देकर अन्य सभी दल एक झंडे तले इकठठा होने का प्रयास करते है। अभी नरेन्द्र मोदी के माध्यम से संघ परिवार का ग्राफ उपर जा रहा है। स्वाभाविक है कि सभी दल चुनावो के पूर्व अपना अस्तित्व बचाने के लिये साम्प्रदायिकता के खिलाफ एक जुट होने का प्रयास करे। उददेश्य न साम्प्रदायिकत का विरोध है न कांग्रेस का। कही चुनाव के बाद इन दोनो के अतिरिक्त दलो की क्षमता घट न जाय इसलिये स्वयं को एक जुट करना आवश्यक है। कांग्रेस पार्टी को वैसे ही कमजोर देखा जा रहा है और भारतीय जनता पार्टी को कमजोर करना आवश्यक है तभी अन्य क्षेत्रीय दलो का अस्तित्व बच सकता है और जब अस्तित्व रहेगा तभी या तो इन दोनो के अतिरिक्त किसी तीसरे की लॉटरी खुल सकती है अन्यथा कम से कम किसी भी दल का सहयोग करके लाभदायक स्थिति मे रहा जा सकता है। वैसे प्रधानमंत्री पद का सपना मुलायम सिंह भी देख रहे है। नितीश कुमार भी देख रहे है। ममता बनर्जी कम्युनिष्टो के कारण इससे दूर रही और मायावती मुलायम सिंह के कारण। वैसे यदि नरेन्द्र मोदी की हवा और तेज हुई तो इन दोनो को भी ऐंसी बैठको मे शामिल होना पड सकता है। सुविधा की राजनीति तो इसी प्रकार होती है और इसी प्रकार होती रहेगी।

4 अंध विश्वास के मकडजाल में सरकार'–

एक साधु के कहने पर डोडिया खेडा में पुरातत्व विभाग ने सोने के भंडार की खोज में खुदाई की। सम्भवतः इतिहास की यह पहली घटना होगी , कि किसी स्वप्न के आधार पर किसी लोकतांत्रीक सरकार ने इतनी खुदाई का फैंसला किया हो । आज भले ही पुरातत्व विभाग यह दावा कर रहा है कि उसने खुदाई अपने पुरातात्विक खोज मात्र के लिए की है, उसका सोने के खजाने पर न पहले विश्वास रहा है, और न अब है, किन्तु खुदाई के पहले पुरातत्व विभाग ऐसी कोई बात नही कह रहा था। बल्कि वह भी स्पष्ट संकेत दे रहा था कि खजाना मिलने की बहुत संभावना है। सुप्रीम कोर्ट तक सक्रिय हुआ था। मीडिया की तो बात ही और है, वह तो पल पल की खबरे लाइव भी चला रहा था। पहली बार नरेन्द्र मोदी ने इस खुदाई का मजाक उडाया किन्तु वे भी डर गये कि कही शायद निकल ही न जाय इसलिए चौबिस घंटे बाद ही वे कथन से पलट गये । शरद यादव अवश्य ही अपनी बात पर डटे रहे। खुदाई शुरू होने के कुछ दिन बाद तो अनेक लोग बोलने वाले निकल गये। बहुत लोगो का मानना है कि इस खुदाई से समाज में अंध विश्वास बढा है किन्तु मेरा मानना इसके ठीक विपरीत है यदि सोना निकल जाता तब तो अंधविश्वास बहुत तेजी से बढता , बल्कि मेरे जैसे व्यक्ति को भी कुछ नया सोचने को मजबूर होना पडता, किन्तु यह खुदाई होने से देश भर में अंधविश्वास को गहरा नुकसान हुआ है। मेरे विचार से सरकार ने भले ही सोने की लालच में खुदाई की हो किन्तु इस खुदाई से ऐसे ऐसे अंधविश्वासी साधुओ पर से विश्वास हटेगा।

मैं अब तक यह नही समझ पा रहा हूॅ कि सरकार ने ऐसी खुदाई करने के बजाय पहले दावा किए गए स्थान पर एक पतला सा बोर क्यो नही कर लिया, जिस जगह पर सोहन सरकार दावा कर रहे थे, या अभी भी कर रहे है वहॉ सरकार की देख रेख में सोहन सरकार एक पतला सा बोर कर ले तो क्या नुकसान हो जायेगा।जब सोना है ही नही तो पतला बोर करने में कोई नुकसान नही है। यदि होगा भी तो इतने बडे सोने के भंडार में से एक दो किलो सोना नुकसान भी हो जायेगा तो क्या बिगड जायेगा। मैने तो बहुत लोगो से पूछा तो इसका कोई उत्तर नही मिला । अभी भी मुझे इस बात का उत्तर चाहिए की ऐसा बोर कर लेना सोहन सरकार की पोल भी खोल देगा और आगे खोज बीन के रास्ते भी खुल जायेंगे। चाहे जो भी हो इस खुदाई ने अंधविश्वास को बहुत नुकसान पहुॅचाया है।